# PLATO: IDEAL STATE

## प्लेटो का आदर्श राज्य

प्लेटो का आदर्श राज्य आने वाले समय और सभी स्थानों के लिए एक आदर्श का प्रस्तुतीकरण है। कुछ आलोचकों का मानना है कि उसने आदर्श राज्य की परिकल्पना करते समय उसकी व्यवहारिकता की उपेक्षा की है। फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उसने आदर्श राज्य की परिकल्पना की थी।

राज्य और व्यक्ति का संबंध :- प्लेटो व्यक्ति और राज्य में जीव का संबंध मानता है। उसका विश्वास है कि जो गुण और विशेषताएँ अल्प मात्रा में व्यक्ति में पाई जाती हैं वही गुण और विशेषताएँ विशाल रूप में राज्य में पाई जाती हैं। राज्य मूलतः मनुष्य की आत्मा का बाहरी स्वरूप है, अर्थात आत्मा (चेतना) अपने पूर्ण रूप से जब बाहर प्रकट होती है तो वह राज्य का स्वरूप धारण कर लेती है। व्यक्ति की संस्थाएँ उसके विचार का संस्थागत स्वरूप है। जैसे:- राज्य के कानून व्यक्ति के विचारों से उत्पन्न होते हैं। न्याय उनके विचारों से अद्भुत होते हैं। यह विचार ही विधि-संहिता और न्यायालयों के रूप में मूर्तिमान होते हैं।

प्लेटो ने मनुष्य की आत्मा में तीन तत्व बताए हैं - विवेक (ज्ञान), उत्साह (शौर्य), क्षुधा (तृष्णा)। इनके कार्यों तथा विशेषताओं के आधार पर इन्हें राज्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया।

आदर्श राज्य का निर्माण : प्लेटो ने जिस आदर्श राज्य की परिकल्पना की थी उसको उत्पन्न करने (निर्माण करने) में तीन तत्व सहायक होते हैं:

(i) आर्थिक तत्व → इसका संबंध उत्पादक वर्ग से है। आर्थिक तत्वों के अन्तर्गत प्लेटो वासना अथवा क्षुधा तत्वों को राज्य का प्रारंभिक आधार मानकर अपनी विवेचना शुरू करता है। आर्थिक तत्वों से अभिप्राय है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को अकेले पूर्ण नहीं कर सकता है। इनकी पूर्ति के लिए व्यक्ति को अन्य लोगों पर निर्भर होना पड़ता है। परस्पर निर्भरता से समाज में श्रम विभाजन तथा कार्य विशेषीकरण उत्पन्न होता है। इससे आर्थिक संघों का निर्माण होता है तथा एक व्यक्ति एक कार्य का सिद्धान्त व्यापक हो जाता है। सेवाओं के आदान-प्रदान से सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है।

"प्लेटो के अनुसार-"आदर्श राज्य की स्थापना के लिए आवश्यकताओं की सर्वोत्तम तुष्टि और सेवाओं का समुचित आदान-प्रदान आवश्यक है।"

(ii) सैनिक तत्व → इसका संबंध सैनिक वर्ग से है। यह राज्य निर्माण हेतु दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। आवश्यकताओं में वृद्धि के साथ ही राज्य को अधिक भू-भाग की आवश्यकता होती है। अतः युद्ध अनिवार्य हो जाता है। बस कार्य हेतु युद्ध की संभावना और उससे रक्षा की आवश्यकता के फलस्वरूप राज्य में उत्साह, साहस या शूरवीर के तत्व का उदय होता है, जिसे युद्ध में सर्वाधिक आनंद आता है।

(iii) दार्शनिक तत्व

(iii) दार्शनिक तत्व – यह शासक वर्ग से संबंधित है। राज्य निर्माण का तीसरा प्रमुख आधार दार्शनिक तत्व है। इसका संबंध आत्मा के विवेक बुद्धि से है। प्लेटो का मानना है कि राज्य के रक्षकों में विवेक का गुण होना अनिवार्य है। उसके अनुसार सैनिक योद्धा में सामान्यतः विवेक का गुण मिलता है किंतु विशेष रूप से यह पूर्ण संरक्षक या शासक में ही पाया जाता है। यह संरक्षक दो प्रकार के होते हैं:- सैनिक संरक्षक तथा दार्शनिक संरक्षक।

प्लेटो का कहना है कि राज्य तभी आदर्श स्वरूप ग्रहण कर सकता है, जब राज्य का शासन ज्ञानी एवं निःस्वार्थ दार्शनिक शासकों द्वारा हो। इसी तत्व को ध्यान में रखकर वह राज्य के उच्च शिखर पर दार्शनिक को नियुक्त करता है।

आदर्श राज्य की आलोचना (Criticism of Ideal State)

प्लेटो के आदर्श राज्य की आलोचना में इतिहासकारों ने कुछ मत दिए हैं जो निम्नलिखित हैं:

(i) आदर्श राज्य एक स्वप्निल संसार है – प्लेटो के आदर्श राज्य की अव्यावहारिकता को देखते हुए उसे एक स्वप्निल संसार कहा गया है। उसे बादलों में स्थित नगर की संज्ञा दी गई है। इसे संध्याकालीन तंतु कहा गया है जो क्षणभर के लिए दृष्टिगोचर होकर रात्रि की नीरवता में विलुप्त हो जाता है।

तंतु – नीरवता –

(ii) स्वतंत्रता का निषेध → प्लेटो का आदर्श राज्य व्यक्तियों को आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता है। यह इतना नियंत्रणकारी है कि इसमें व्यक्तियों की सभी प्रवृत्तियों का विकास संभव नहीं है। प्लेटो का आदर्श राज्य एक सर्वाधिकारी राज्य है और वह अपने स्वभाव से ही मानवीय स्वतंत्रता के हित में नहीं हो सकता है।

(iii) उत्पादक वर्ग की उपेक्षा – प्लेटो के आदर्श राज्य में उत्पादक वर्ग की उपेक्षा की गई है। वह अन्य दोनों वर्गों की तरह इसके लिए न तो विशेष शिक्षा की व्यवस्था करता है और न ही सामाजिक ढाँचे में उनको महत्वपूर्ण स्थिति प्रदान करता है।

(iv) शासक वर्ग की निरंकुश सत्ता → प्लेटो के आदर्श राज्य में कानूनों और नियमों का पूर्ण अभाव है और इसमें दार्शनिकों को निरंकुश सत्ता सौंप दी गई है, जिसे किसी भी उचित नहीं कहा जा सकता है। वे कितने भी विवेकशील और विज्ञ (वीतरागी) क्यों न हों अनियंत्रित शक्ति पा जाने पर मानवीय स्वभाव के अनुसार इनमें दोष आ जाना स्वाभाविक है।

(v) कानून की उपेक्षा → आदर्श राज्य में कानून को स्थान न देना प्लेटो ने बड़ी भूल की है। कानून की संपूर्ण उपेक्षा के कारण ही प्लेटो के आदर्श राज्य की अत्यन्त कठोर आलोचना अरस्तू से आज होती चली आ रही है।

हालाँकि आगे चलकर उसने लाॅज में राज्य में कानून की अनिवार्यता को स्वयं स्वीकार किया है।

(vi) व्यक्ति और राज्य की समानता का अत्यधिक महत्व :

अपने आदर्श राज्य में प्लेटो ने व्यक्ति और राज्य में जिस बड़ी मात्रा में समानता के दर्शन किए हैं, उस मात्रा में व्यक्ति एवं राज्य में समानता वास्तव में होती ही नहीं है। इसी समानता को तथ्य मानकर प्लेटो ने मानव प्रकृति के तीन तत्वों विवेक, उत्साह तथा क्षुधा के आधार पर राजनीतिक समुदाय के निर्माण करने वाले लोगों को बड़ी कठोरता के साथ तीन भागों में बांट दिया है।